कृषि आधारित उद्योगों द्वारा रोजगार सृजन-एक पार्श्व विश्लेषण (कानपुर देहात के विशेष संदर्भ में)

बीज शब्द : *कृषि आधारित उद्योग, रोजगार, खाद्य प्रसंस्करण, व्यावसायिक फसल, कृषि।*

कानपुर औद्योगिक नगरी के कारण से ख्यात रहा है। वर्तमान कानपुर देहात में अनेक कृषि उत्पादन से संबंधित उद्योग स्थित हैं। इन उद्योगों में स्थानीय ग्रामीणों एवं कृषि उत्पादों को आर्थिक संरक्षण प्राप्त होता रहा है। प्रस्तुत शोध आलेख में कानपुर देहात में स्थित कृषि आधारित उद्योगों में रोजगार सृजन की दशा-दिशा का अध्ययन किया गया है।

डॉ शरद दीक्षित
सहायक प्राध्यापक,
आर.एल.बी. महाविद्यालय,
पनकी, कानपुर नगर।

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
शोध संचयन

कृषि क्षेत्र विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं में रोजगार देने वाली एक प्रमुख क्रिया है। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में व्यापक श्रमशक्ति कृषि क्षेत्र से ही अपनी आजीविका कमाती है। औद्योगिक क्षेत्र में रोजगार अवसरों के सृजन हेतु अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है। इससे पृथक कृषिगत रोजगार सृजन अपेक्षाकृत कम पूँजी और कौशल की अपेक्षा रखता है। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की सर्वप्रमुख अड़चन पूँजी की कमी है। इस दृष्टि से यह श्रेयस्कर होता है कि विकास के प्राथमिक चरण में रोजगार सृजन हेतु कृषि क्षेत्र पर अधिक ध्यान दिया जाए। उन्नत कृषि दशाओं में कृषि से ही सम्बद्ध गैर-फर्म रोजगार अवसर बढ़ने के अतिरिक्त जनसंख्या को रोजगार दिया जा सकता है।

आर्थिक विकास के प्रारम्भिक चरण में नवीन और उदीयमान औद्योगिक प्रतिष्ठानों हेतु श्रमशक्ति की आपूर्ति कृषि क्षेत्र से ही होती है। सामान्यत: यह माना जाता है कि कृषि क्षेत्र में अतिरिक्त श्रम विद्यमान है। इस कारण कृषि उत्पादन में कमी किये बिना औद्योगिक क्षेत्र के लिये श्रमिकों का हस्तान्तरण किया जा सकता है। कृषि क्षेत्र अपनी अग्रगामी और पश्चगामी संलग्नता के कारण भी रोजगार अवसरों में वृद्धि करता है। खेतिहर जनसंख्या की आय वृद्धि से औद्योगिक उत्पादनों की माँग रोजगार बढ़ाने में सहायक है।

उद्देश्य

(1) अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों की वर्तमान स्थिति ज्ञात करना।

(2) अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत कृषि आधारित उद्योगों में रोजगार सृजन एवं आय सृजन का अध्ययन करना।

साहित्य समीक्षा

शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य जो उपलब्ध हुआ है उसमें (1) डॉ0 आर0ए0 चौरसिया द्वारा लिखित पुस्तक 'एग्रो इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट-ए स्टडी' है, इसमें योजनाकाल के पश्चात् भारत में कृषि आधारित औद्योगीकरण के विकास को प्रस्तुत किया गया है। (2) डॉ0 ब्रजेन्द्र नाथ बनर्जी की पुस्तक 'इण्डस्ट्री एग्रीकल्चर एण्ड रूरल डेवलपमेंट' है। इसमें डॉ0 बनर्जी ने यह स्पष्ट किया है कि ग्रामीण विकास में कृषि आधारित उद्योग विशेष महत्त्व रखते हैं। (3) जिला उद्योग केन्द्र द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'औद्योगिक निर्देशिका' है इसमें जिले में कृषि आधारित उद्योगों की स्थिति (रोजगार, पूँजी, उत्पादन) को स्पष्ट किया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक शोध प्रविधि के अन्तर्गत

सर्वेक्षाणात्मक अनुसंधन विधि पर आधारित होगा तथा साक्षात्कार अनुसूची की संरचना करके प्राथमिक संमको का संकलन किया जायेगा। संमको का विश्लेषण सामान्य रूप से प्रचलित सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया जायेगा।

विमर्श

कानपुर देहात जनपद एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था यहाँ कृषि भी उत्पादन, आय और उद्योगों के उद्भव और विकास का आधार है, यह एक कृषि अतिरेक अर्थव्यवस्था है। यह जनपद कानपुर मण्डल के अन्तर्गत आता है जिसे प्रस्तुत शोध पत्र हेतु अनुसंधन की आधार भूमि बनाया गया है। इस जनपद में 10 ब्लॉक है जिनके नाम इस प्रकार हैं-राजपुर, मैथा, संदलपुर, सरवनखेड़ा, अकबरपुर, मलासा, अमरौध, डेरापुर, रसूलाबाद, झींझक। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3021 वर्ग किमी0 है तथा यह जनपद उ0प्र0 के पश्चिमी दिशा में लखनऊ और कानपुर नगर के बीच स्थित है। इसका मुख्यालय माती है।[2] कृषि उत्पादन प्रधान इस जनपद की मुख्य फसले आलू, गेहूँ, चावल, दाल, तिलहन आदि है। जहाँ तक औद्योगिक विकास का प्रश्न है यह जनपद कानपुर नगर की तरह संगठित औद्योगिक ढाँचे को प्रदर्शित नहीं करता बल्कि यहाँ पर सूक्ष्म, मध्यम और लघु पैमाने के उद्योग अर्थव्यवस्था में प्रभुत्व रखते है।[4] इस जनपद का औद्योगिक परिदृश्य तालिका सं0-1 में दिग्दर्शित है।

तालिका सं०-1

''कानपुर देहात जनपद में औद्योगिक परिदृश्य''

S. No.	Head	Unit	Particulars
1.	पंजीकृत औद्योगिक इकाईयाँ	Nos.	5290
2.	कुल औद्योगिक इकाईयाँ	Nos.	5456
3.	पंजीकृत मध्यम एवं बृहत इकाईयाँ	Nos.	7
4.	सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों में रोजगार	Nos.	14333
5.	औद्योगिक क्षेत्र की संख्या	Nos.	05

स्रोत-भारत सरकार सूक्ष्म एवं लघु उद्योग मंत्रालय रिपोर्ट पृष्ठ-7 तालिका सं0-3

तालिका सं0-2 यह दर्शित करती है कि कानपुर देहात जनपद में खाद्य फसलों को बोये जाने का प्रतिशत क्या है? इस उपरोक्त तालिका में समग्र क्षेत्र के सापेक्ष खाद्य फसलों के अन्तर्गत बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत अकबरपुर विकासखण्ड के सन्दर्भ में सर्वाधिक है। इसका तात्पर्य यह है कि अकबरपुर विकासखण्ड कृषि आधारित औद्योगीकरण का लाभप्रद और सम्भाव क्षेत्र है।

तालिका सं०-2

''कानपुर देहात जनपद में खाद्य फसलों के बोये जाने का विवरण''

समग्र क्षेत्र से मुख्य फसलों के अन्तर्गत बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत

समग्र क्षेत्र के सापेक्ष खाद्य फसलों के अन्तर्गत बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत					
क्रमांक	विकासखण्ड	प्रतिशत	क्रमांक	विकासखण्ड	प्रतिशत
1.	अकबरपुर	152.20	1.	अकबरपुर	110.2
2.	रसूलाबाद	145.10	2.	रसूलाबाद	90.8
3.	मैथा	138.70	3.	मैथा	76.1
4.	राजपुर	132.50	4.	राजपुर	82.8
5.	सरवनखेड़ा	131.90	5.	सरवनखेड़ा	77.0
6.	संदलपुर	130.50	6.	संदलपुर	82.7
7.	झींझक	128.90	7.	झींझक	93.3
8.	मलासा	126.60	8.	मलासा	81.9
9.	डेरापुर	118.70	9.	डेरापुर	83.5
10.	अमरौध	114.00	10.	अमरौध	75.5

स्रोत-जिला उद्योग केन्द्र, कानपुद देहात। रिफरेन्स-1, पृष्ठ-27

कानपुर देहात जनपद में कृषि आधारित खाद्य प्रसंस्करण उद्योग सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है क्योंकि इस जनपद में इन उद्योगों की संवृद्धि एवं विकास की पर्याप्त सौविध्य दशायें प्रवर्तमान है। तदसापेक्ष तालिका सं0-3 इस स्थिति को स्पष्ट रूप से अंकित करती है।

तालिका सं०-3

''कानपुर देहात जनपद में कृषि-आधारित उद्योगों के घटक''

क्रमांक	उत्पादों का वर्गीकरण	उद्योगों की संख्या	प्रस्तावित पूँजी निवेश (रू0 रोड़)	वास्तविक पूँजी निवेश (रू0 करोड़)	सृजित रोजगार
1.	खाद्य उत्पाद	132	58.73	58.73	916
2.	पेय तम्बाकू	00	00.00	00.00	00
3.	कॉटन टेक्सटाइल	5	09.13	09.13	96
4.	ऊन, सिल्क एवं सिंथेटिक	2	09.07	09.07	130
5.	जूट	0	00.00	00.00	00
6.	वुड प्रोडक्ट	2	00.33	00.33	14
7.	पेपर प्रोडक्ट एवं प्रिंटिंग	5	10.20	10.20	70
8.	लेदर प्रोडक्ट	15	04.03	04.03	517
9.	रबर एवं प्लास्टिक प्रोडक्ट	16	09.24	09.24	170

स्रोत-कारखाना अधिनियम रिपोर्ट, पृष्ठ-42

टिप्पणी

उपरोक्त सारणी में 132 पंजीकृत इकाईयाँ 132 दिखलाई गयी है।[3] सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि 26 औद्योगिक इकाईयाँ रुग्ण है। अत: यह अध्ययन 106 जीवित इकाईयों पर आधारित है।

तालिका संख्या-4 इस अर्थ में महत्त्वपूर्ण है कि यह सभी दस विकासखण्डों में दाल, चावल, जूट, पैडी फ्लोर और तेल मिलों की संख्यात्मक स्थिति को दिखलाती है। पुन: एक बार यह स्पष्ट होता है कि खाद्य आधारित यह सभी उद्योग अकबरपुर विकासखण्ड में संक्रेन्द्रित है।

तालिका सं०-4

''कानपुर देहात जनपद में कृषि आधारित खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का विवरण''

क्र0 सं0	विकासखण्ड	संख्या						
		दाल मिल	चावल मिल	जूट	पैडी	फ्लोर मिल	तेल मिल	योग
1.	राजपुर	01	01	00	00	04	02	08
2.	मैथा	01	03	01	01	02	01	09
3.	संदलपुर	01	00	01	01	02	02	07
4.	सरवनखेड़ा	03	00	03	00	06	03	15
5.	झींझक	00	00	02	01	05	02	10
6.	अकबरपुर	02	14	01	01	05	01	24
7.	रसूलाबाद	01	04	02	00	01	01	09
8.	डेरापुर	02	03	00	01	01	02	09
9.	मलासा	00	01	01	02	02	00	06
10.	अमरौध	02	03	01	01	01	02	10
		योग						106

स्रोत-जिला सांख्यिकीय कार्यालय कानपुर देहात, वार्षिक रिपोर्ट 2015, पृष्ठ-72

टिप्पणी

पंजीकृत इकाईयों की संख्या जो कि जिला उद्योग केन्द्र कानपुर देहात से प्राप्त हुई है वह 136 है। सर्वेक्षण में यह पाया गया कि जनपद में 20 प्रतिशत इकाईयाँ रुग्ण है। अत: सक्रिय उद्योग 106 है।

जहाँ तक विकासखण्ड वार खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के भौगोलिक संकेन्द्रण का प्रश्न है इस हेतु भौगोलिक संकेन्द्रण सूचकांक संरचित किया गया है यह सूचकांक सम्बन्धित विकासखण्ड के कृषि उत्पाद अतिरेक के घनत्वशीलता पर आधारित है। तालिका सं0-5 में इस महत्त्व का विवरण दर्शाती है। तालिका सं0-5 के अनुसार कृषि आधारित दाल प्रसंस्करण उद्योग सर्वाधिक रूप से अकबरपुर विकासखण्ड में संकेन्द्रित है। इसी प्रकार चावल प्रसंस्करण उद्योग भी अकबरपुर में, जूट अमरौध में, पैडी डेरापुर में, गेहूँ प्रसंस्करण उद्योग (फ्लोर) राजपुर में तथा तेल घानी प्रसंस्करण उद्योग मलासा में सर्वाधिक केन्द्रित है। इस प्रकार से खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का कानपुर देहात जनपद में संकेन्द्रण अकबरपुर, अमरौध, डेरापुर, राजपुर और मलासा में है।

जहाँ तक विकास खण्डवार खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के भौगोलिक संकेन्द्रण का प्रश्न है। इस हेतु भौगोलिक संकेन्द्रण सूचकांक संरचित किया गया है। यह सूचकांक सम्बन्धित विकासखण्ड के कृषि उत्पाद अतिरेक के घनत्वशीलता पर आधारित है। तालिका सं0-5 इस महत्त्व के विवरण को दर्शाती है। तालिका सं0-5 के अनुसार कृषि आधारित दाल प्रसंस्करण उद्योग सर्वाधिक अकबरपुर विकासखण्ड में संकेन्द्रित है। इसी प्रकार चावल प्रसंस्करण उद्योग भी अकबरपुर में, जूट अमरौध में, पैडी डेरापुर में, गेहूँ प्रसंस्करण उद्योग (फ्लोर) राजपुर में तथा तेल घानी प्रसंस्करण उद्योग मलासा में सर्वाधिक केन्द्रित है। इस प्रकार से खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का कानपुर देहात जनपद में संकेन्द्रण अकबरपुर, अमरौध, डेरापुर, राजपुर और मलासा में है।

तालिका सं०-5

''खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का भौगोलिक संकेन्द्रण निर्देशांक''

आधार सूचकांक-१००

क्र0 सं0	विकासखण्ड	संकेन्द्रण सूचकांक					
		दाल मिल	चावल मिल	जूट	पैडी	फ्लोर मिल	तेल मिल
1.	राजपुर	01	01	00	00	04	02
2.	मैथा	01	03	01	01	02	01
3.	संदलपुर	01	00	01	01	02	02
4.	सरवनखेड़ा	03	00	03	00	06	03
5.	झींझक	00	00	02	01	05	02
6.	अकबरपुर	02	14	01	01	05	01
7.	रसूलाबाद	01	04	02	00	01	01
8.	डेरापुर	02	03	00	01	01	02
9.	मलासा	00	01	01	02	02	00
10.	अमरौध	02	03	01	01	01	02

स्रोत-साक्षात्कार अनुसूची।

टिप्पणी

(1) दाल प्रसंस्करण उद्योग - सर्वाधिक संकेन्द्रण अकबरपुर।
(2) चावल प्रसंस्करण उद्योग- सर्वाधिक संकेन्द्रण अकबरपुर।
(3) जूट प्रसंस्करण उद्योग-सर्वाधिक संकेन्द्रण अमरौध।
(4) पैडी प्रसंस्करण उद्योग- सर्वाधिक संकेन्द्रण डेरापुर।
(5) फ्लोर प्रसंस्करण उद्योग- सर्वाधिक संकेन्द्रण राजपुर।
(6) तेल घानी प्रसंस्करण उद्योग- सर्वाधिक संकेन्द्रण मलासा।

उद्योगों का श्रमिकों के रोजगार सृजन से धनात्मक सह-सम्बन्ध है।[7] उद्योग-धन्धे कुशल और अकुशल श्रम को

विनियोजित करके उत्पादन फसल संरचित करते है। कानपुर देहात जनपद का कृषि उत्पादन कृषि आधारित प्रसंस्करण उद्योगों का आगत पक्ष स्तम्भित करता है। उल्लेखनीय है कि खाद्य प्रसंस्करण उद्योग श्रम प्रधन है और यह लघु उद्योगों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है।4 इसमें पुरूष और स्त्री दोनों प्रकार के श्रमिक कार्यरत होते है जोकि कुशल एवं अकुशल दोनों ही होते है। पुरूष के सापेक्ष महिला श्रमिक नगण्य संख्या में इस उद्योग में कार्यरत है, सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया। औसत रूप से जहाँ पुरूष श्रमिक इन उद्योगों में 85: तक कार्यरत है वही महिला श्रमिकों का अधिकतम भांगाश 15: है। सम्भवत: इसका कारण यह है कि पुरूष श्रमिक न केवल तुलनात्मक रूप से अधिक कुशल होते है वरन उनकी सीमान्त उत्पादकता एवं सीमान्त कार्य क्षमता भी स्त्रियों की तुलना में अधिक होती है। पुन: स्त्रियाँ केवल इन मिलों की तुलना में अधिक होती है। पुन: स्त्रियाँ केवल इन मिलों में कार्य ही नहीं करती वरन् वह गृह प्रबंधन में भी सम्बद्ध रखती है। इसलिये इनकी संख्या भी नगण्य है चूँकि यह उद्योग अपने सातक्य के लिये कृषि उत्पादों पर आधारित है। अत: विनियुक्त श्रमिकों की रोजगार की प्रस्थिति फसल उत्पादन के चक्र पर आधारित है। अर्थात् अगर फसलें अच्छी हुयी तो मिलों में रोजगार बढ़ जाता है वरना घट जाता है। इस प्रकार सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि फसलोत्पादन और कृषि आधारित खाद्य प्रसंस्करण उद्योग तथा श्रम के विनियोजन में धनात्मक सह सम्बद्ध है। सबसे प्रबल तथ्य यह है कि कृषि आधारित खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में रोजगार की संरचना स्थायी न होकर तदर्थ है यह इस उद्योग का बहुत कमजोर पक्ष है जोकि इसके संवृद्धि एवं विकास को कुप्रभावित करता है।

तालिका सं0-6 में विकासखण्ड वार कृषि आधारित खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का जनित रोजगार का पक्ष प्रस्तुत करती है।

पुन: एक बार यह स्पष्ट होता है कि यह रोजगार सर्वाधिक अकबरपुर विकासखण्ड में सृजित है।

तालिका सं०-6

''विकासखण्ड वार कृषि आधारित खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों द्वारा जनित रोजगार का परिदृश्य''

क्र0 सं0	विकासखण्ड	मुख्य कृषि आधारित उद्योग	कार्यरत मिलों की सं0	विनियुक्त श्रमशक्ति (प्रतिशत में)			
				पुरूष कुशल	पुरूष अकुशल	स्त्री कुशल	स्त्री अकुशल
1.	राजपुर	90 दाल मिल	08	15.00	85	0.227	06.00
2.	मैथा	88 तेल मिल	09	14.50	84.5	02.20	0.620
3.	संदलपुर	90 तेल मिल	07	14.00	86	02.10	07.85
4.	सरवनखेड़ा	95 तेल मिल	15	11.00	89	2.15	07.85
5.	झींझक	101 तेल मिल	10	12.00	88	2.00	07.65
6.	अकबरपुर	118 चावल मिल	24	11.50	88.50	2.65	07.35
7.	रसूलाबाद	106 जूट मिल	09	14.00	86	2.00	8.00
8.	डेरापुर	110 तेल मिल	09	12.00	88	2.12	07.88
9.	मलासा	110 पैडी मिल	06	13.00	87	2.04	07.81
10.	अमरौध	102 फ्लोर मिल	09	13.70	85.30	2.17	07.96

स्रोत-साक्षात्कार अनुसूची।

अन्तिम विमर्श

कानपुर देहात जनपद में कृषि अर्थव्यवस्था रोजगार देने वाली एक प्रमुख प्रक्रिया है। इस क्षेत्र में व्यापक श्रम शक्ति कृषि क्षेत्र से ही अपनी आजीविका का निर्वाह करती है। औद्योगिक क्षेत्र में रोजगार अवसरों के सृजन हेतु अधिक पूँजी की आवश्यकता है। इसके विकास हेतु कृषि क्षेत्र पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। जिसके फलस्वरूप उन्नत कृषि दशाओं में कृषि से ही सम्बद्ध गैर-फर्म रोजगार अवसर बढ़ने के अतिरिक्त जनसंख्या को रोजगार दिया जा सकता है। खेतिहर जनसंख्या की आय वृद्धि से ही औद्योगिक उत्पादनों की माँग रोजगार को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी।

संदर्भ:-

1. औद्योगिक निर्देशिका पत्रिका-जिला उद्योग केन्द्र, कानपुर देहात, जुलाई-2015, पृष्ठ-82
2. भारत सरकार सूच्म एवं लघु उद्योग मंत्रालय रिपोर्ट, पृष्ठ-7, तालिका-3
3. कारखाना अधिनियम कार्यालय रिपोर्ट, पृष्ठ-8, 9
4. जिला सांख्यिकीय कार्यालय, कानपुर देहात, वार्षिक रिपोर्ट-2015, पृष्ठ-72, 76, 78
5. साक्षात्कार अनुसूची।
6. इण्डस्ट्री एग्रीकल्चर एण्ड रूरल डेवलपमेंट-डॉ0 बृजेन्द्रनाथ बनर्जी, पृष्ठ-137, 139
7. एग्रो इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट ए स्टडी-डॉ0 आर0ए0 चौरसिया, पृष्ठ-207
8. योजना मासिक पत्रिका, कुरूक्षेत्र पत्रिका एवं खादी ग्रामोद्योग पत्रिका।